बाग में बुद्ध
लेखनः डेविड बुशार्ड
चित्रांकनः ज़ाँग-याँग हुआँग, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

इस दीप्तिमान कथा में एक शिशु को एक बौद्ध मठ के द्वार पर छोड़ दिया जाता है। परिसर में रह रहे बौद्ध भिक्खु (सन्यासी) उसका पालन-पोषण करते हैं। मन्दिर के भिक्खु ज्ञान/बोधि की तलाश में दुनिया भर में यात्राएं करते थे, पर वह बालक बड़ा हो मठ के बाग की देखभाल करता है। उसकी दोस्ती एक अंधे भिक्खु से होती है, जो मठ के बाग के द्वार पर बैठा करता था। वह यात्रा करने के लिए बहुत वृद्ध हो चुका था।

एक दिन वृद्ध भिक्खु लड़के से कहता है, "बुद्ध बाग में हैं!" लड़का खुशी से भर बाग में इस उम्मीद से भागता है कि वह बुद्ध भगवान के दर्शन कर सकेगा; पर उसे अन्दर एक भूखा बिल्ली का बच्चा मिलता है। करुणा से भर वह बिल्ली के बच्चे को अपने साथ ले जाता है और उसको खिलाता-पिलाता है। तीन भिन्न-भिन्न अवसरों पर वृद्ध भिक्खु कहता है कि "बुद्ध बाग में हैं!" हर बार लड़के को पशु मिलते हैं जिन्हें तीमारदारी की ज़रूरत होती है। अंततः लड़का ज्ञान/बोधि की प्रकृति को समझ जाता है - यात्रा से लौटे भिक्खुओं को इससे अचरज होता है।

इस मर्मस्पर्शी कथा के अतुल्य चित्र इसे सजीव बनाते है। *बाग में बुद्ध* चाइनीज़ लेजैण्ड ॠंखला की चैथी पुस्तक है।

बाग में बुद्ध

लेखनः डेविड बुशार्ड

चित्रांकनः ज़ाँग-याँग हुआँग

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मठ के भिक्खु (भिक्षु/बौद्ध सन्यासी) बुद्धिमान और नेक थे। मठ का भिक्खु बनना भारी सम्मान है। उन्हें पवित्र और चुना गया माना जाता है। मठ के सभी भिक्खु चुने गए थे - सिवा बाग की देखभाल करने वाले लड़के के।

भिक्खु अक्सर मठ से बाहर जाते हैं।

वे दुनिया भर में यात्राएं कर बोधि को तलाशते हैं।

मठ के सभी भिक्खु यात्राओं पर जाते हैं, सिवा दो जनों के - बाग की देखभाल करने वाले लड़के और वृद्ध अंधे भिक्खु के, जो दिन भर मठ के द्वार पर बैठा ध्यान करता है।

कई साल पहले बाग की देखभाल करने वाला लड़का एक दिन मठ के द्वार पर अचानक पड़ा मिला था। गुदड़ी में लिपटा, एक छोटी गठरी-सा। भिक्खुओं को वह परसा फूल के पौधे के पास पड़ा मिला था।

भिक्खुओं ने अनिच्छा से उसकी परवरिश की क्योंकि किसी शिशु का पालन-पोषण उनके जीवन का ध्येय नहीं था। पर फिर भी बच्चा पल-बढ़ गया। समय गुज़रने के साथ वह अपने एकाकी संरक्षकों के नियम-कानूनों के अनुसार जीने लगा।

पर लड़के को ज्ञान/बोधि के बारे में सोचने की छूट न थी। जिस फूल के पास वह मिला था, उसे भिक्खुओं ने संकेत माना और किशोर होने पर उसे मठ के बाग का बागवान बना दिया।

बाग की देखभाल करना महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी थी। एक शान्त अंधेरी भोर में किशोर अपने कंधों पर दो बाल्टियाँ लादे मठ के द्वार के पास बाग तक पहुँचा। उसकी आँखें धरती पर गड़ी थीं। अचानक उसे एक पुरुष की फुसफुसाहट सुनाई दी।

वह चौंक पड़ा, उसने पहले इधर देखा तब उधर। पर उसे उस अंधे भिक्खु के सिवा कोई नज़र न आया, जो कभी किसीसे एक भी शब्द बोलता ही नहीं था।

लड़का मुड़ कर बाग में जाने को हुआ कि उसे फिर वही आवाज़ सुनाई दी।

''बुद्ध बाग में हैं!'' आवाज़ ने कहा।

किशोर फ़ौरन पलटा। हाँ वृद्ध भिक्खु ही बोले थे। किशोर ने कहा, ''गुरुजी, मैं पिछले नौ सालों से बाग की देखभाल करता आ रहा हूँ, मैंने भगवान बुद्ध को न तो कभी देखा, न कभी सुना। शायद उनके दर्शन वे लोग ही कर पाते हैं, जो योग्य हों? शायद भिक्खु उन्हें तब देख सकेंगे, जब वे सब्ज़ियाँ लेने बाग में आएं?''

पर वृद्ध भिक्खु ने कुछ न कहा। वे शान्त बैठे रहे।

किशोर ने कुछ पल जवाब का इन्तज़ार किया, पर कोई उत्तर न मिला। सो कुछ पल बाद वह बाग में चला गया।

बाग में घुस किशोर ने उसका कोना-कोना छान मारा। जब उसे भरोसा हो गया कि बुद्ध बाग में कहीं नहीं हैं।

तब वह अपनी पसन्दीदा जगह गया, जहाँ वह अमूमन सुस्ताता था। परसा फूल के पौधे के पास। वह वहाँ आलथी-पालथी मार कर बैठा। उसकी खुली हथेलियाँ आसमान की ओर थीं। उसने आँखें बन्द कीं और सपने देखने लगा।

सपने में उसने एक युवा स्त्री को देखा जो एक जर्जर दीवार की टेक लिए बैठी थी। उसका चेहरा कृशकाय था और आँखें सूनीं। वह किसी चीज़ पर झुकी थी, मानो उसकी रक्षा कर रही हो। उसके पीले, दुबले हाथ एक छोटी-सी गठरी को मज़बूती से थामे थे।
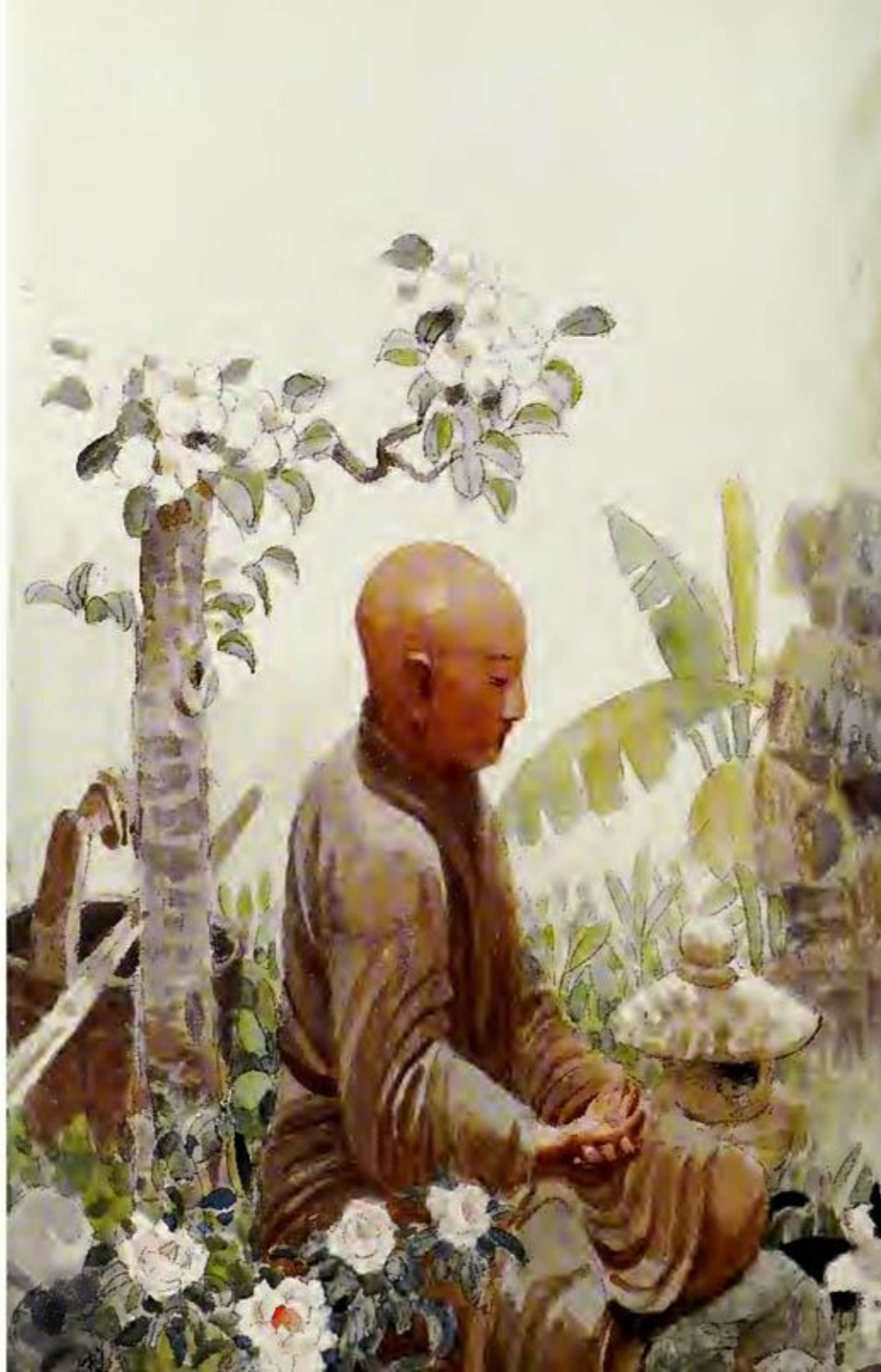
लड़के की आँखें खुलीं और उसे एक छोटा-सा भूखा बिल्ली का बच्चा नज़र आया। वह अचरज से भर उठा। मठ में पशु बिरले ही नज़र आते थे। बिलौटी इतनी पतली थी कि उसकी हड्डियाँ खाल से उभरी दिखाई दे रहीं थीं।

लड़के ने उसे उठाया। अपने कमरे में ले जाकर उसे खिलाया-पिलाया। वह उसकी देखभाल करने लगा, जैसे भिक्खुओं ने उसकी की थी।
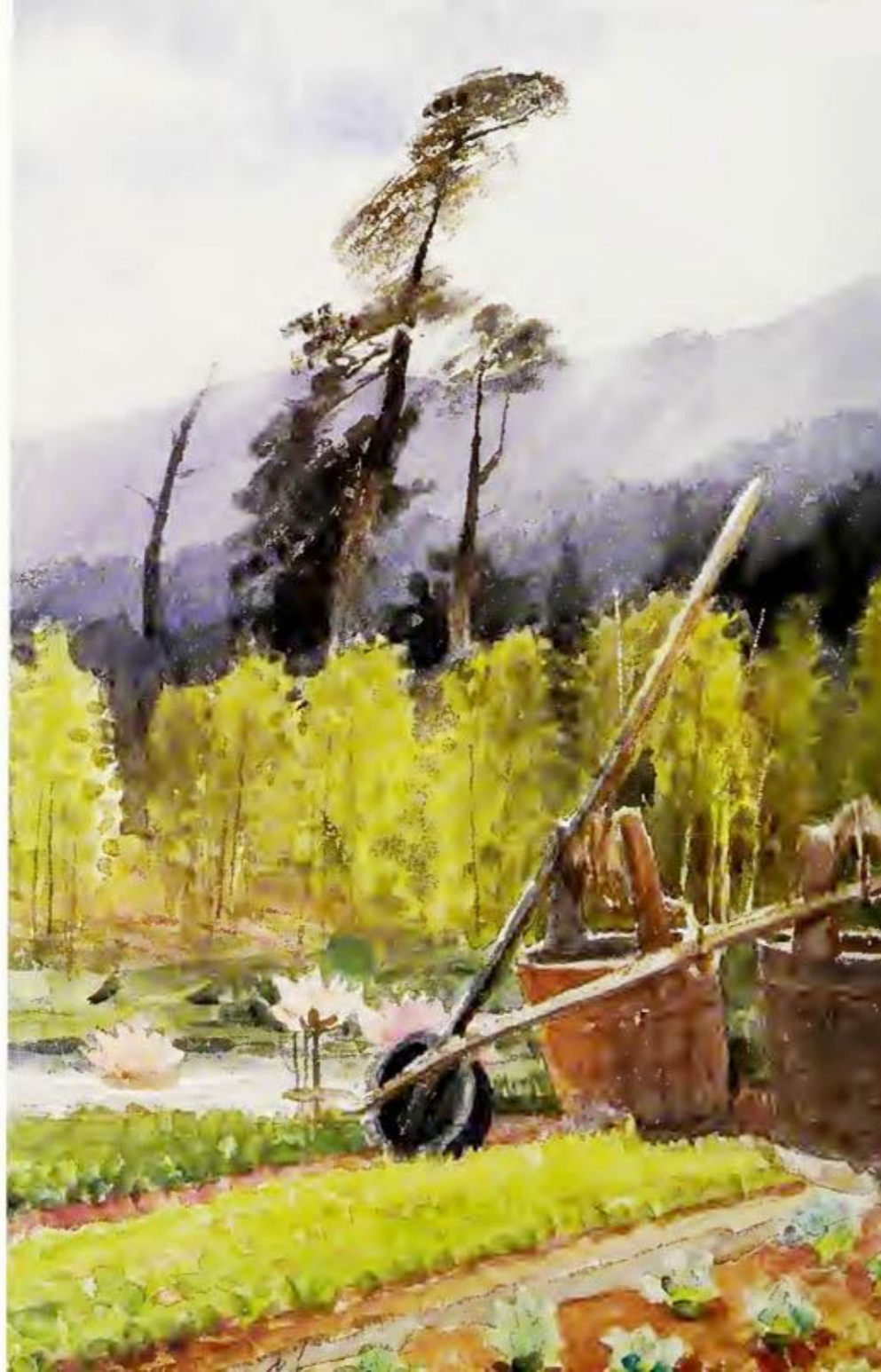
कई सप्ताहों बाद जब किशोर विहार के द्वार को पार कर बाग में जा रहा था, उसने वृद्ध भिक्खु को दूसरी बार यह कहते सुनाः "बुद्ध बाग में हैं!"

लड़का भिक्खु के सामने बैठ गया।

"आपने जब पिछली बार यह कहा था गुरुजी, मैंने उन्हें पूरे बाग में ढूंढा। पर मुझे सिर्फ़ एक भूखा बिल्ली का बच्चा मिला। मैं उन्हें कहाँ तलाशूं? वे मुझे किस रूप में मिलेंगे?"

कुछ मौन पलों बाद जवाब न पा लड़का बाग में अपनी पसन्दीदा जगह गया। बिल्ली का बच्चा उसके चोंगे में दुबका हुआ था। वह आँखें मूंद भिक्खु की बात पर सोचने लगा।

उसके सपने में फिर वही युवा स्त्री आई। वह अब भी उसी जर्जर दीवर के पास उकड़ूं बैठी थी। वह ज़ोर से खांस रही थी। गुदड़ी में लिपटी पोटली इस बार उसके पैरों के पास धरती पर पड़ी थी।

लड़के का मन अचानक भारी हो उठा। हल्की सरसराहट सुन उसने अपनी आँखें खोलीं।

परसा फूल के पौधे के पास उसे एक चिड़िया नज़र आई जो उड़ने की कोशिश कर रही थी, पर उड़ नहीं पा रही थी। उसका एक पंख टूटा हुआ था। लड़के ने उसे उठाया और अपने कमरे में ले जाकर उसकी तीमारदारी की। तब तक, जब तक वह ठीक न हो गई।

अगले कुछ सप्ताहों तक किशोर बागवान हर दिन कुछ देर तक वृद्ध भिक्खु के पास बैठता। वह उनके जीवन के बारे में प्रश्न पूछता। अपने बाग की, परसा के फूल की, खूबसूरती का बखान करता। अपने सपने की एक-एक बारीकी का वर्णन करताः उस सुन्दर युवा स्त्री, उसकी भूख और बीमारी, गोदड़ी में लिपटी पोटली के बारे में बताता, जिसकी उस स्त्री को इतनी फ़िक्र थी।

इस दौर में एक दिन वृद्ध भिक्खु फिर बोला।

लड़का उन्हें एक मधुमक्खी की लम्बी कहानी सुना रहा था, जो अचानक बाग में घुस आई थी और इधर-उधर मंडरा रही थी। वृद्ध भिक्खु ने उसकी बात काटी।

"तुमने भूख और बीमारी देख ली है लड़के! ये पहले दो संकेत हैं। जल्द ही तुम तीसरा संकेत भी देखोगे। तब तुम वह बोधि पा लोगे जिसे हम सब तलाश रहे हैं।
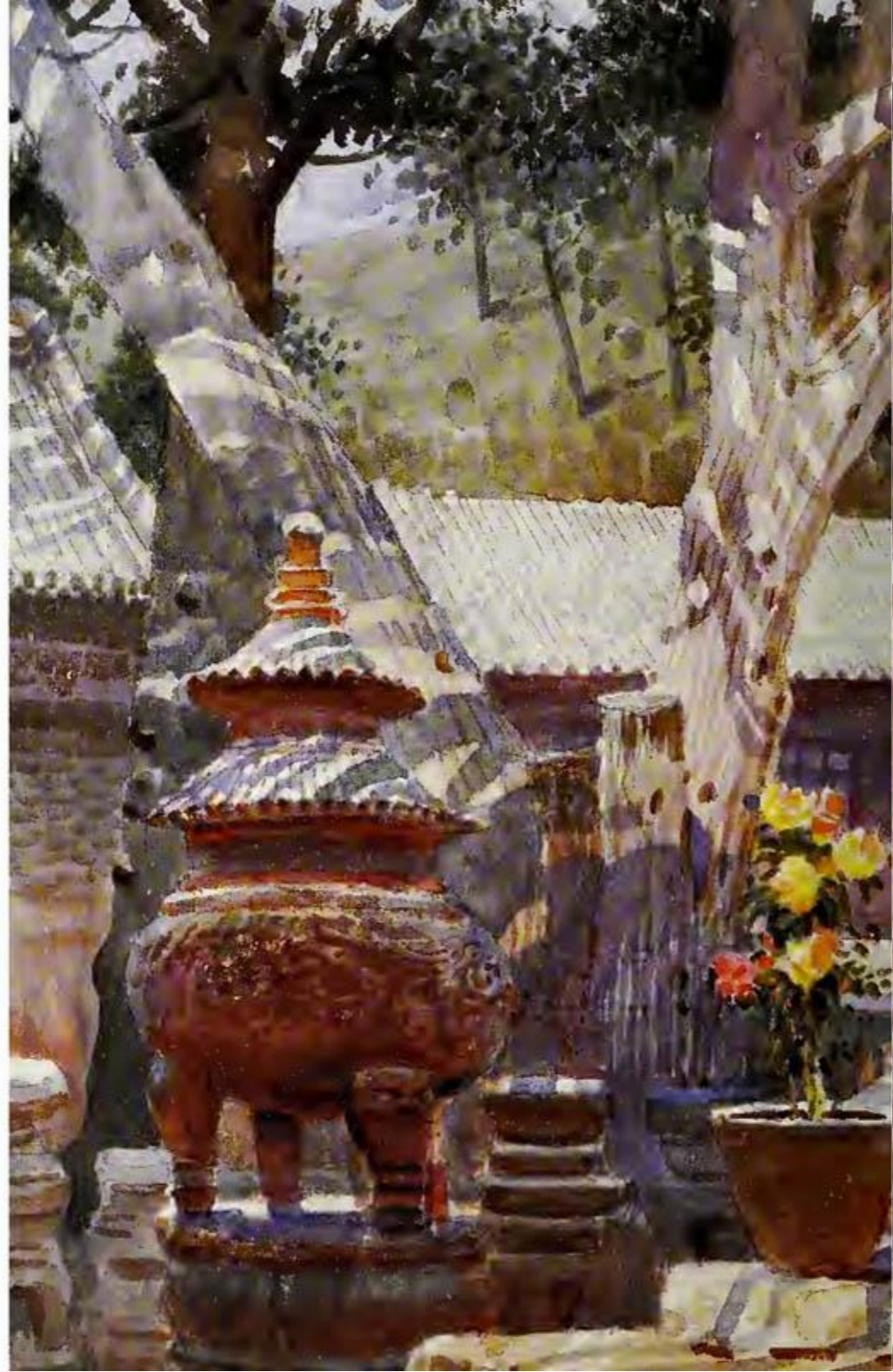
यह सोच कि उसे रहस्यमय स्त्री फिर से दिख सकेगी, लड़का बाग में भागा। पर जब वह अपनी पसन्दीदा जगह गया, वह जड़-सा रह गया। उसकी नज़र परसा के फूल पर गड़ी थी।

फूल मुरझा कर अपनी टहनी से लटक रहा था। पर लड़के को इससे अचरज न हुआ। हर साल फूल मरता और फिर से जन्मता था - किशोर को अचरज इस बात से हुआ कि परसा के मरने का यह सही समय न था।

फिर भी खुद को शान्त कर लड़का पेड़ के नीचे बैठा, अपनी आँखें बन्द कीं और इन्तज़ार करने लगा।

कुछ ही समय में उसे सपनों वाली स्त्री फिर से दिखी। उसकी मुस्कान में बागवान को अपनी मुस्कान दिखाई दी। पहली बार वह स्त्री मुड़ी और उसने किशोर को देखा। उसकी आवाज़ भी लड़के की आवाज़-सी थी - कोमल दयालु, परवाह करने वाली।

"मैं तुम्हें देखने का तरसती रही हूँ, मेरे बेटे। इतने वर्षों तुम्हारे साथ रही, पर अब मुझे जाना होगा। तुमने भूख को पहचाना, रोग को देखा। तुम यह भी जानते हो कि तुम्हारा फूल मर गया है, पर वह फिर से जन्मेगा, फिर से जिएगा। तुम अब समझ गए हो कि हम किस तरह जुदा हुए। यह तीसरा संकेत है। यही ज्ञान/बोधि की कुंजी है।"

कोमलता से भर मुस्कुराती वह स्त्री अपने बेटे के पास आई और किशोर को अपने बाँहों में भर लिया।

जब लड़का माँ के आगोश में था, उसने अपनी आँखें कस कर बन्द कर लीं। उसने संकल्प किया कि इस धरती और स्वर्ग की कोई भी वस्तु उसे इस स्थान और इस शान्ति से दूर नहीं ले जा सकेगी।
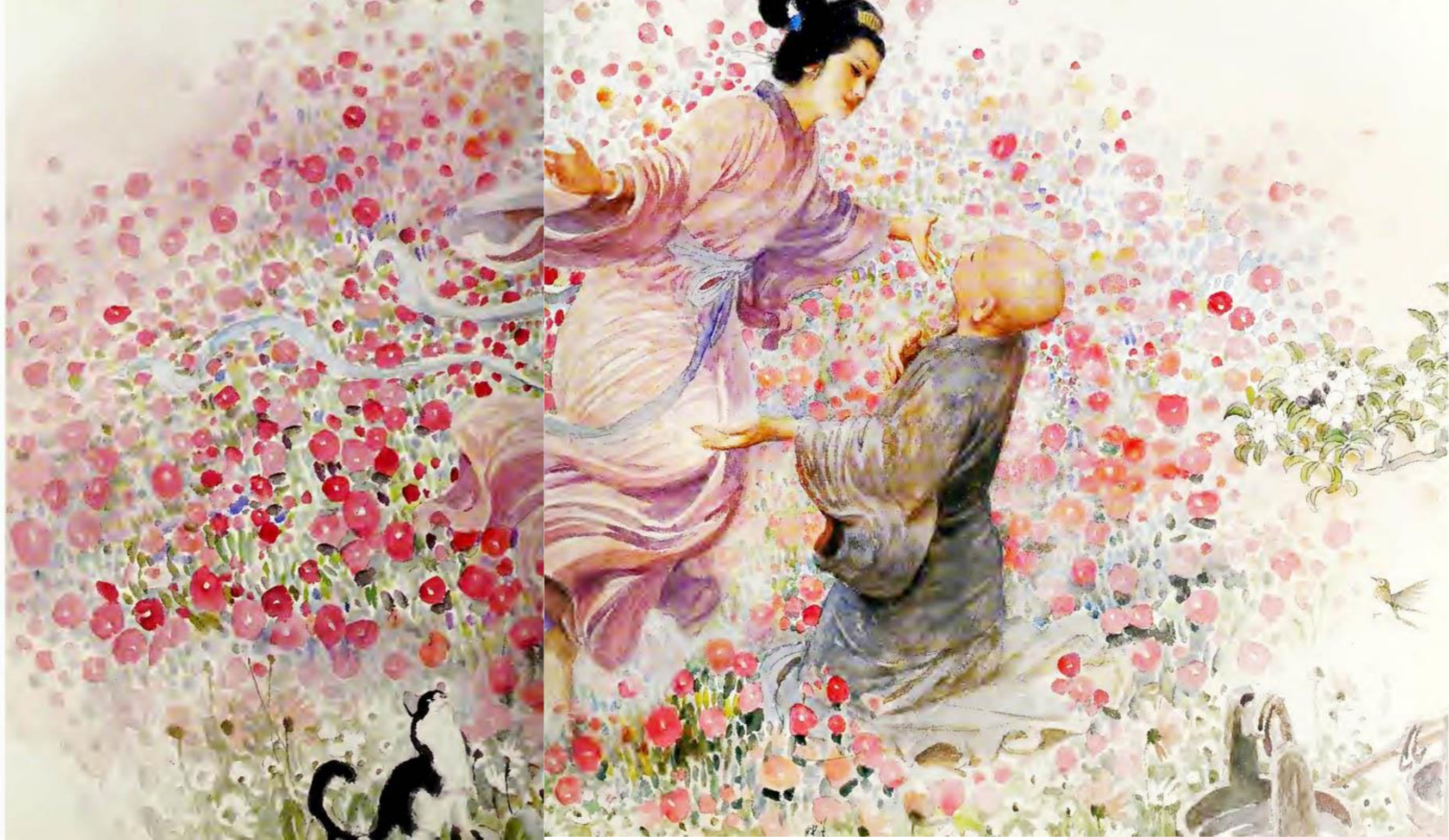
कुछ दिनों बाद सात भिक्खु बोधि की तलाश की अपनी यात्रा से लौटे। वे द्वार पर पहुँचे ही थे कि उन्होंने वृद्ध भिक्खु को कुछ कहते सुना।

"बाग में बुद्ध हैं!"

सातों भिक्खु बाग में घुसे। मरे हुए परसा फूल के पौधे के पास उन्हें एक मुस्कुराते बुद्ध की प्रतिमा दिखाई दी। प्रतिमा में बुद्ध आलथी-पालथी मारे बैठे थे, उनकी खुली हथेलियाँ आकाश की ओर थीं, और आँखें मुंदी हुई थीं।

उन सातों भिक्खुओं ने वह देखा जिसे वे आजीवन तलाशते रहे थे - शान्ति और पूर्ण संतुष्टि।

उस मुस्कुराते बुद्ध की गोद में गुड़ीमुड़ी हो सोया एक बिल्ली का बच्चा था और एक नन्ही-सी चिड़िया।
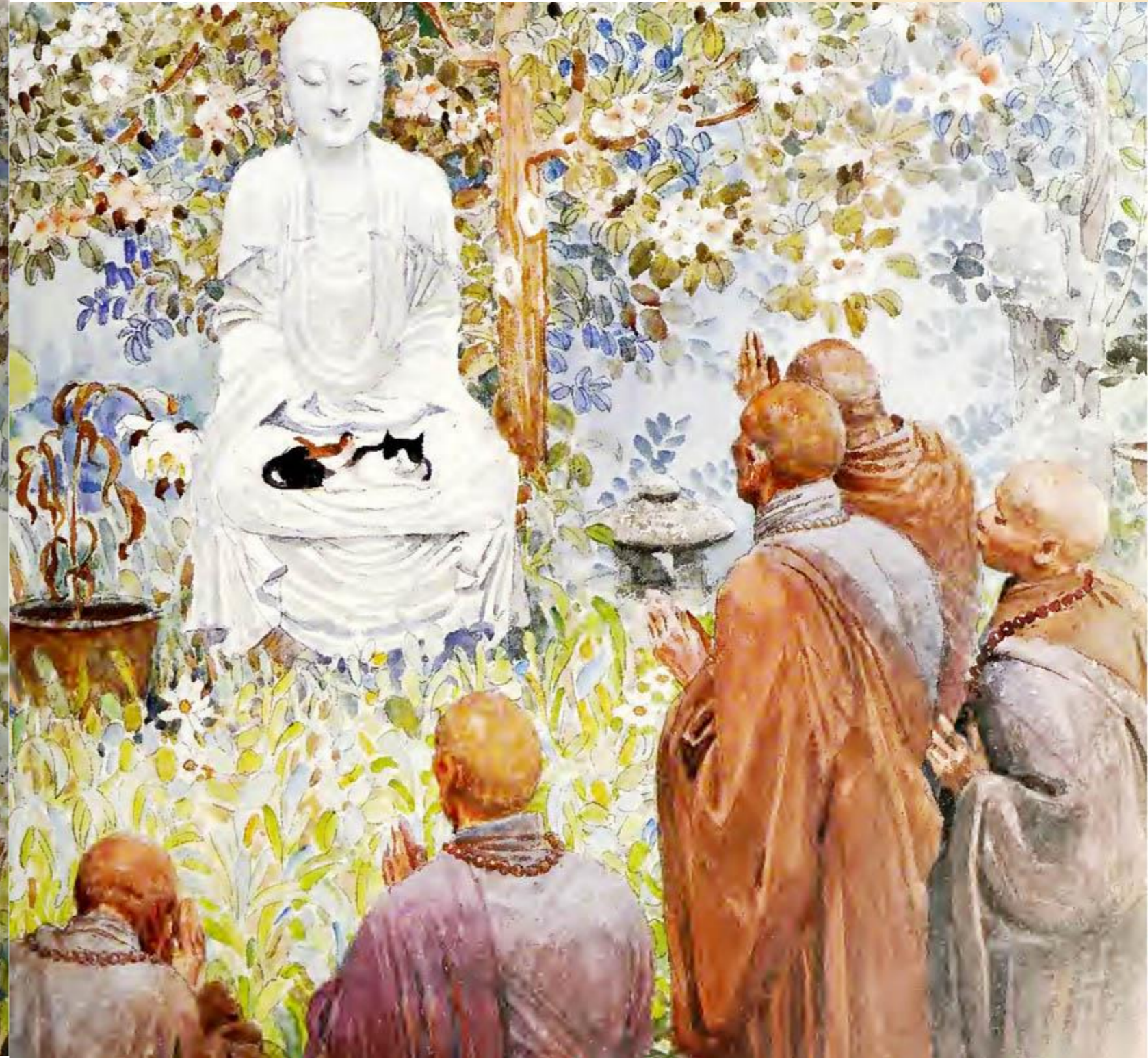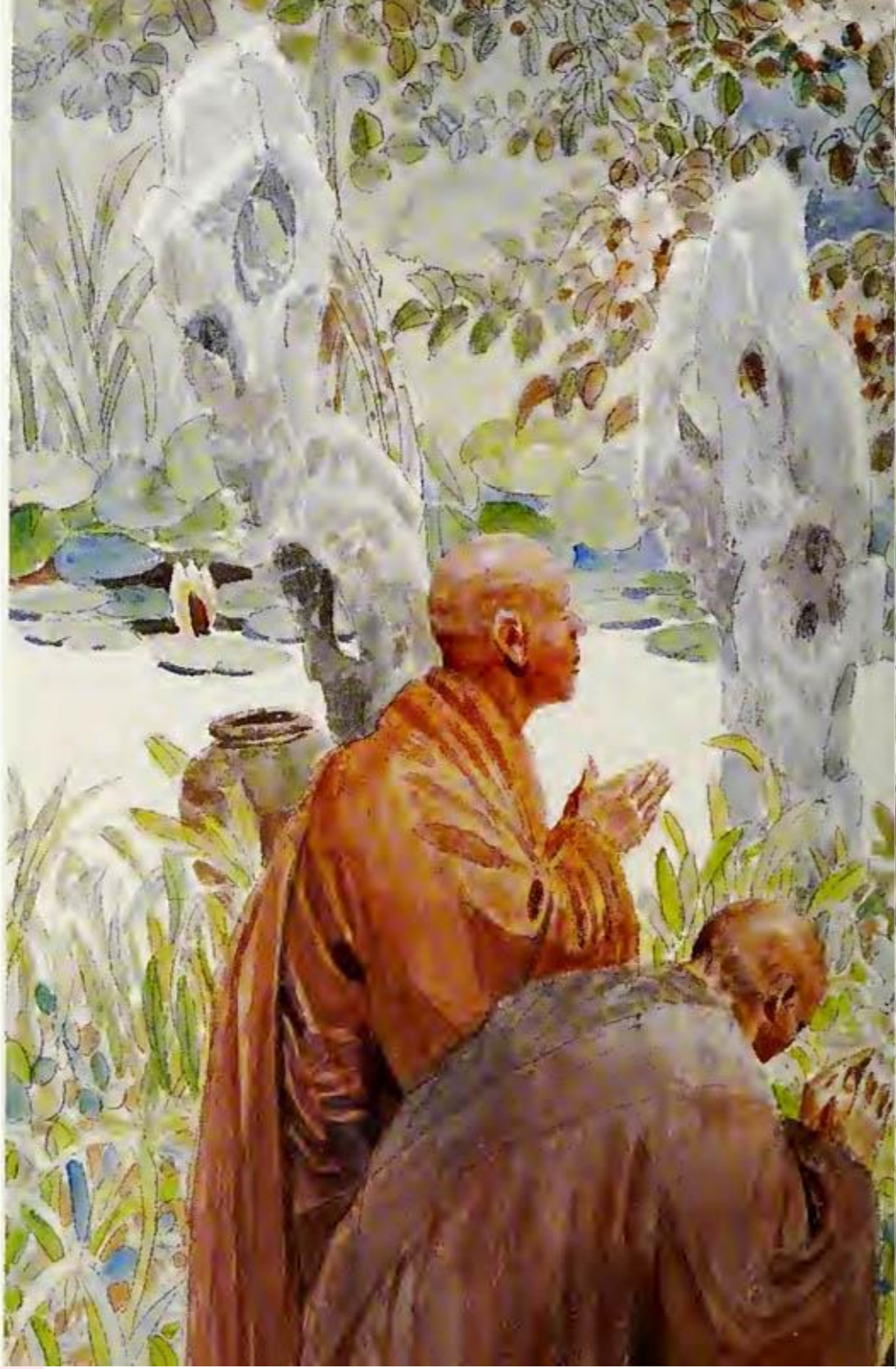
बाग में बुद्ध की कहानी

बौद्ध धर्म को मानने वाले कहेंगे कि हमारी कहानी में बुद्ध का सटीक चित्रण किया गया है। वे कहेंगे, कि ऊँचे पर्वतों में स्थित एक बाग बुद्ध के लिए श्रेष्ठ स्थान है। यह श्रेष्ठ वातावरण व्यक्ति को वास्तविक ज्ञान/बोधि को समझने के बारे में बहुत कुछ बताता है।

हमारी कहानी बोधि के चार संकेतों पर आधारित हैः भूख, रोग, मृत्यु और बोधि की तलाश। यह कहानी कालातीत है। यह कहानी 2500 वर्ष पहले प्रथम बुद्ध, सिद्धार्थ गौतम के काल में घट सकती थी, और आज भी हिमालय पर्वत में कहीं घट सकती है, जहाँ जीवन आज भी ठीक वैसा है जैसा 2500 साल पहले रहा होगा। मैं वहाँ जा चुका हूँ।

हमारी कहानी का अधिकांश भाग डेविड के दिलो-दिमाग में उपजा, पर पूरी तरह नहीं। वृद्ध भिक्खु असली हैं। कुछ और लोग भी। मैंने उन्हें देखा है। मैं उन्हें जानता हूँ।

कई वर्षों पहले मैं एक बौद्ध मठ में गया था। मैं बोधि की तलाश नहीं कर रहा था। मैं एक चित्रकार था, जो प्रेरणा को तलाश रहा था। मठ के भिक्खुओं ने मुझे अपने साथ रहने की अनुमति दी। इस शर्त पर कि मैं भी ठीक वैसे जीवन जिऊं, जैसे वे जीते हैं और उनके सभी नियमों का पालन करूं। उनके नियम सादे थेः मैं माँस नहीं खाऊंगा। उनके बाग में उगने वाली साग-सब्ज़ियों से गुज़ारा चलाऊंगा। भोजन पकाने के लिए मैं तेल, नमक या मिर्च-मसालों का उपयोग नहीं करूंगा,
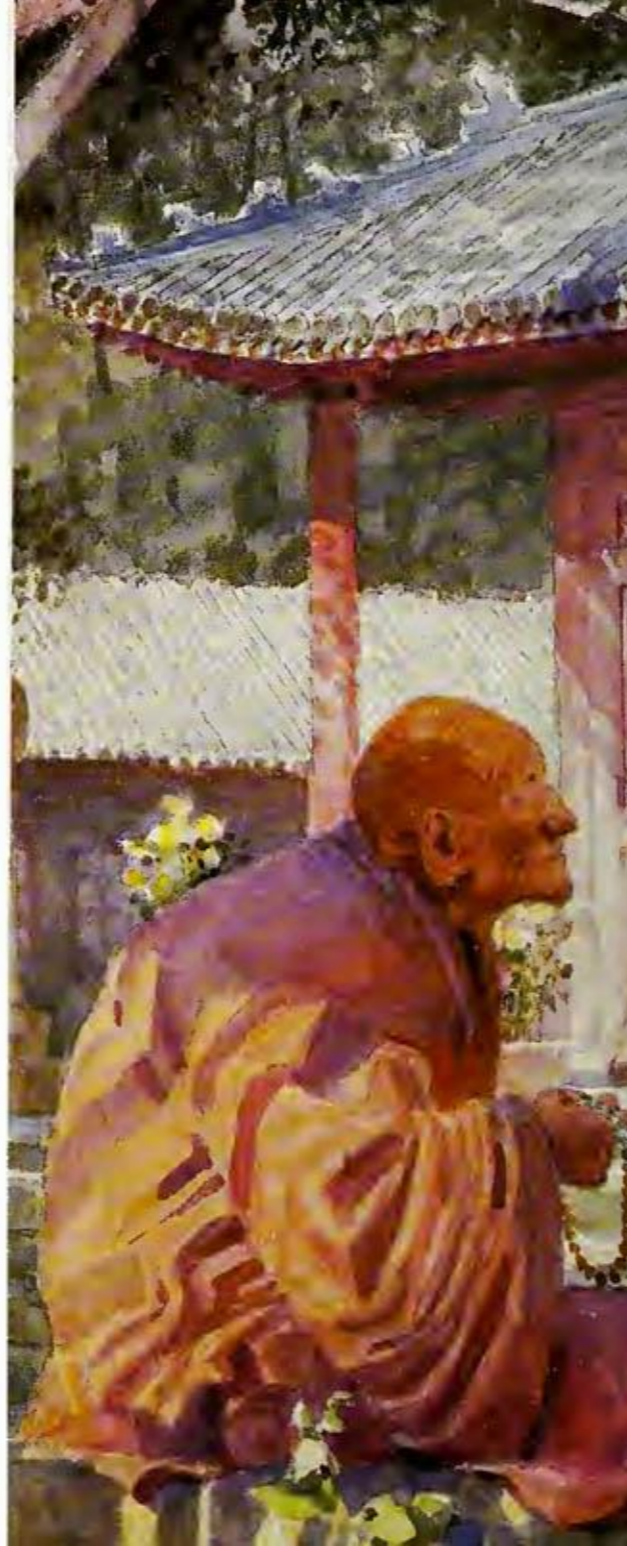
जो मेरे भोजन की पवित्रता को कम करें। मैं केवल वही पानी पिऊंगा और उसीसे शरीर साफ़ करूंगा जो सीधे आसमान से गिरता हैः यानी बरसाती पानी।

पहले-पहल सब ठीक चला। पर कुछ सप्ताहों बाद मुझे कमज़ोरी महसूस होने लगी, मैं बीमार पड़ा। गर्मियों का वह मौसम सूखा था, और हम सब एक ही पीपे से शरीर साफ करते थे। कुछ समय बाद वह पानी गंदा हो चला। उससे बदबू आने लगी। भिक्खुओं का खाना खाना मेरे लिए मुश्किल हो चला - दिनों-दिन वही बेस्वाद साग-सब्ज़ियाँ! जब यह सब मेरी सहन से बाहर हो गया मैं मठ से निकल पहाड़ से नीचे उतरा, और उसके तल में बसे एक गाँव में गया। वहाँ मैं नहाया और भरपेट खाना खाया।

उस रात जब मैं मठ में अपने बिस्तर पर लेटा था, एक भिक्खु ने मेरे दरवाज़े पर दस्तक दी। उसने कहा कि अगर मैंने फिर से नियम तोड़ा तो मुझे मठ से वापस चले जाना होगा। सभी भिक्खुओं को पता था कि मैंने क्या किया है, क्योंकि मुझमें माँस की महक बसी थी। इसके बाद मैंने नियम नहीं तोड़ा, न मैं अधिक समय वहाँ रहा। हालांकि तब तक ज़रूर टिका जब तक मैंने वे सारे चित्र नहीं बना लिए जो आज आप देख रहे हैं।

बोधि/ज्ञान के चार संकेत भी वास्तविक हैं। अंधे भिक्खु भी असली हैं। मैं मठ के द्वार पर कई बार उनके सामने बैठा। एक पूरा दिन मैंने उनका चित्र बनाते गुज़ारा, हालांकि मैंने उनसे अनुमति नहीं ली। मैंने उनकी आवाज़ केवल तब सुनी जब मैं जाने के लिए उठा। उन्होंने कहा, "यह दिन मेरे साथ बिताने के लिए धन्यवाद मेरे मित्र!"

- ज़ाँग-याँग हुआँग

मेरी प्रेरणा विकी के लिए

- डेविड बोशार्ड

मेरे प्यारे बच्चों शौन व ज़ोई के लिए

- ज़ाँग-याँग हुआँग

डेविड बोशार्ड एक मशहूर वक्ता और लेखक हैं। वे अपना अधिकांश समय अपने जुनूनों पर बात करते बिताते हैं - जो किताबें और पठन हैं। उनकी प्रसिद्ध बाल पुस्तकें *हैः इफ यू आर नॉट फ्रॉम द परेरीज़* और चाइनीज़ लेजैण्डस् की अन्य पुस्तकें, *द ग्रेट रेस, द मरमेडस् म्यूज़* और *द ड्रैगन न्यू इयर*। वे विक्टोरिया, ब्रिटिश कोलम्बिया में रहते हैं।

ज़ॉग-यॉग हुआँग का जन्म गुआन्झो, चीन में हुआ था। वे चार वर्ष की उम्र से चित्र आँकते रहे हैं। 1984 से वे कनाडा में रहने लगे हैं। उन्होंने गुआन्झो ललित कला अकादमी व रेजीना विश्वविद्यालय से ललित कला में स्नातकोत्तर डिग्रियाँ प्राप्त की हैं। उनके चित्र दुनिया भर में प्रदर्शित हुए हैं और कई निजी संग्रहों का हिस्सा हैं। उन्होंने कई पुस्तकों के लिए चित्र बनाए हैं, जिनमें चाइनीज़ लेजैण्डस् ॠंखला की पुस्तकें शामिल हैं। वे रेजीना, सुस्कैचवन में रहते हैं।